द्वितीय अध्याय

''हिन्दी उपन्यासों में नारी''

प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति विश्व विख्यात है। भारतीय संस्कृति में नारी की अनन्य साधारण महत्ता है। नारी के हर रूप का चित्रण भारतीय साहित्य में दिखाई देता है। कई बार ऐसा भी महसूस होता है कि नारी ही साहित्य निर्मिति का मूल है।

हिंदी साहित्य में भी नारी अनेक रूपों में दिखाई देती है। उसके हर रूप में तत्कालीन परिस्थिति का परिमाण दिखाई देता है। आदिकालीन साहित्य में नारी के जो रूप दिखाई देते है, वे भी उस काल की परिस्थिति के परिणामस्वरूप ही है। आदीकाल की राजनीतिक, सामाजिक तथा धार्मिक परिस्थिति की वजह से नारी का अपना विशेष उच्च स्थान नहीं था, बल्कि रोजमर्रा के युद्‌ध का कारण नारी बन गयी थी। पुरुष प्रधान संस्कृति में केवल पुरुष के लिए एक उपभोग्य वस्तु के रूप में नारी की ओर देखा जाता था। मध्ययुग में भक्तों ने नारी के प्रति आदरभाव व्यक्त करते हुए नारी को आदर्श तक पहुँचाने का प्रयास किया; किंतु उत्तर मध्यकाल में नारी जीवन दीन हीन बन गया। इसका कारण तत्कालीन राजनीतिक परिस्थिति ही मानी जाती है।

सामान्यतः आधुनिक हिंदी साहित्य का विकास भारतेन्दु युग से माना जाता है। आधुनिकता एवं अंग्रेजी साहित्य के प्रभाव से हिंदी गद्‌य साहित्य का विकास हुआ। गद्‌य साहित्य की अनेक विधाओं को हिंदी साहित्यकारों ने अपनाया। हिंदी गद्‌य साहित्य में उपन्यास, कहानी, नाटक, एकांकी, रेखाचित्र, संस्मरण, निबंध आदि अनेक विधाओं का विकास हुआ। साहित्य के इन सभी विधाओं में नारी चित्रण सहज और स्पष्ट दिखाई देता है। इनमें समय और परिस्थिति के अनुरूप नारी चित्रण हुआ है। बदलते समय और परिस्थिति के परिणामस्वरूप

भारतीय नारी-जीवन में भी अमूलाग्र परिवर्तन होता हुआ दिखाई देता है।

2.1 उपन्यास – विकास यात्रा

भारतीय समाज में स्त्री-पुरुष का अस्तित्व समान महत्त्वपूर्ण है। समाज के व्यवहारी क्षेत्र पर पुरुष का, तो कला और साहित्य पर नारी का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। साहित्य में भी पुरुष को स्त्री की अपेक्षा अधिक महत्त्व क्यों दिया जाता है ? स्त्री को अधिक महत्त्व क्यों नहीं ? मेरे मन में उठे इन सारे सवालों के जवाब का विश्लेषण यह है कि साहित्य में गौण या दुर्बल पक्ष को प्रकाशित करके उसे न्याय दिलाने की कोशिश होती है। यही साहित्य निर्मिती का मुख्य उद्‌देश्य होता है। मानव समाज सदा ही विकास एवं उन्नति का पक्षधर रहा है। सदियों से घर, समाज एवं धर्म पर पुरुष-वर्ग का वर्चस्व रहा है। इसी लिए वह समाज और साहित्य का मुख्य अंग बना रहा है। परंतु आदिशक्ति, जगत्-जननी आदि रूपों को अपने अंदर समाए हुए 'नारी' आज भी दुर्लक्षित, उपेक्षित तथा हीनता की हकदार है तथा नारी को इस स्थिति से उभारकर उसकी संवेदनाओं को तथा उसके बहुरंगी व्यक्तित्व को उभारना आज के आधुनिक साहित्य का मुख्य लक्ष्य है। विभिन्न विधाओं द्‌वारा साहित्यकारों ने नारी-संबंधी अपने दृष्टिकोण को समाज के सामने रखा है। साहित्यकार हमेशा से ही नारी के महान स्वरूप को शब्दों में ढालकर, उसके व्यक्तित्व पर आघात पहुँचाने वाले घटकों को साहित्य के माध्यम से प्रस्तुत करता है और उसका निरूपण करने की कोशिश करता है।

भारतीय साहित्य में 'नारी-चित्रण' के कई रूप झलकते हैं। विशेष रूप से उपन्यास विधा में नारी जीवन का सूक्ष्म चित्रण स्पष्ट दिखाई देता है। परिणामतः उपन्यास साहित्य ने अपनी अलग पहचान बनायी है। उपन्यास साहित्य पर विचार करने से पूर्व 'उपन्यास' शब्द के अर्थ को समझना आवश्यक है। 'उपन्यास' शब्द 'उप' + 'न्यास' से बना है। 'उपन्यास' शब्द का व्युत्पति जनक अर्थ है - 'उप-निकट', 'न्यास-रखा हुआ'; 'उपन्यास' शब्द का अर्थ है हमारे आसपास घटित होनेवाली घटनाओं का यथार्थ चित्रण जिसमें किया जाता है उसे उपन्यास कहते है। वास्तव में हिंदी गद्‌य साहित्य का विकास आधुनिक युग की देन है जबकि भारत के प्राचीन संस्कृत-साहित्य, हितोपदेश, पंचतंत्र, कथा सरित्सागर, बृहत्कथा, वैताल पंचविशंती, वासवदत्ता, दशकुमार चरित तथा कादम्बरी आदि कथा साहित्य को उपन्यास निर्माण का आधार कहा जाता है। ''संस्कृत साहित्य में - कादम्बरी, दशकुमार चरित्र तथा शिवराज विजय आदि अनेक गद्‌य कृतियाँ हैं - जिन्हें तात्विक दृष्टि से उपन्यास कहा जा सकता है किन्तु संस्कृत साहित्य में इन्हें उपन्यास शब्द से कहीं व्यवहृत नहीं किया गया है।''[1] तात्पर्य उपन्यासों की निर्मिति आदिकाल से होती रही किंतु कह सकते है उसकी रचना आधुनिक युग

की ही देन है। उपन्यास निर्मिती का बीज आदिकालीन साहित्य में दिखाई देता है किंतु उसकी रचना आधुनिक युग की ही देन है।

गद्य की अन्य विधाओं के समान 'हिंदी-उपन्यास' भी आधुनिक युग की देन है। आधुनिक हिंदी गद्य साहित्य पर पाश्चात्य साहित्य का प्रभाव सहज दिखाई देता है। योरोप के रोमांटिक कथा साहित्य से भारतीय साहित्य प्रभावित था। "निःसंदेह भारतीय साहित्य में आधुनिक उपन्यासों के बहुत से उपकरण विद्यमान थे, किंतु 19 वीं शती के हिंदी साहित्य में उपन्यास का उद्भव और विकास अंग्रेजी साहित्य के परिणामस्वरूप हुआ। भारत के जो प्रदेश अंग्रेजी संपर्क में पहले आए, उनमें उपन्यासों का प्रचलन अपेक्षाकृत पहले हुआ। यही कारण है कि बंगाल में उपन्यासों की रचना हिंदी से पहले आरंभ हो गई, अतः हिंदी उपन्यास साहित्य पर बंगला के अनेक लेखकों का प्रभाव पड़ा है।"[2] इस तरह प्रारंभिक हिंदी-उपन्यासों पर अंग्रेजी तथा बंगला साहित्य का प्रभाव प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से दिखाई देता है।

"हिंदी गद्य साहित्य के अन्य अंशो के समान उपन्यासों का उद्भव आधुनिक हिंदी साहित्य के प्रारंभ में भारतेन्दु काल में हुआ।"[3] इसी काल में अंग्रेजी तथा बंगला उपन्यासों का हिंदी में अनुवाद होने लगा था। बाद में हिंदी साहित्य के विकास काल में उपन्यास जगत को 'प्रेमचंद' नामक उपहार मिल गया। "प्रेमचंद... नवीन क्रांतिकारी चेतना के अग्रदुत बनकर उपन्यास के क्षेत्र में आए। हिंदी-उपन्यासों का वास्तविक प्रारंभ प्रेमचंद से ही मानना चाहिए - क्योंकि उन्हीं के समय में उपन्यास प्रेम-कथा, तिलिस्मी, ऐय्यारी, जासूसी, चमत्कारों तथा धार्मिक उपदेशात्मक क्षेत्रों को छोड़कर सच्चे अर्थों में समाज के क्षेत्र में आया।"[4] प्रेमचंद के मौलिक साहित्य से हिंदी साहित्य जगत गर्वोन्नत हुआ है। प्रेमचंद ने हिंदी उपन्यास परंपरा का सूत्रपात किया है।

महान् साहित्यकार जयशंकर प्रसाद का आगमन हिंदी साहित्य के विकास के दौर में हुआ। इस युग में विविध सामाजिक संस्था तथा अनेक समाज सुधारक नारी को समाज में सम्मान दिलाने के लिए प्रयत्नरत थे। प्रसाद के समकालीन साहित्यकार नारी के विविध आयामों को अभिव्यक्ति देने का प्रयास कर रहे थे। प्रसाद ने नारी के उदार एवं त्यागशील वृत्ति को अपने साहित्य में आदर्शवादी स्वरूप को प्रस्तुत किया। उन्होंने नारी को धार्मिक तथा सामाजिक क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण स्थान दिलाया है। प्रसाद ने अपने साहित्य में भारतीय नारी के आदर्शवत एवं अभूतपूर्व स्वरूप के दर्शन कराए है। प्रसाद अपनी युगीन परिस्थिति को भलिभाँति जानते थे। इस कारण उन्होने सामाजिक नवोत्थान एवं नारी-चेतना को साहित्य निर्माण के लिए आवश्यक माना था। प्रसाद का साहित्य भारतीय संस्कृति का वाहक माना जाता है। प्रसाद ने साहित्य में अनेक गंभीर विषयों का अध्ययन करके 'नारी जीवन' को समाज के सामने प्रस्तुत किया है।

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
KOLHAPUR.

प्रसाद के साहित्य में नारी के प्रेरणादायिनी स्वरूप के दर्शन होते है। उन्होंने भारतीय नारी के यथार्थ जीवन-दर्शन को उसके संस्कारशील एवं पूज्यनीय स्वरूप को अपने साहित्य में दर्शाया है। प्रसाद ने उपन्यास साहित्य में नारी जीवन के विभिन्न स्वरूपों को 'आदर्शवत' रूप में प्रस्तुत किया है। प्रसाद की हर एक नारी समाज के सभी स्तरों की नारियों का प्रतिनिधित्व करती दिखाई देती है। प्रसाद के उपन्यास में व्याप्त 'नारी' के इसी जीवंत-भंडार को खोलना इस संशोधन का मुख्य लक्ष्य है। प्रसाद के उपन्यासों के नारी जीवन को विस्तार से देखने से पूर्व उनके पूर्ववर्ती, समकालीन तथा पश्चात के उपन्यासकारों के उपन्यासों में व्याप्त नारी-चित्रण के स्वरूप पर विचार करना उपयुक्त होगा।

हिंदी के श्रेष्ठ साहित्यकार प्रेमचंद एवं अन्य साहित्यकारों ने नारी के इर्द-गिर्द के विषय को पृष्ठभूमि बनाई और समाज को नारी के सर्वांगीण पक्ष के दर्शन कराए। अतः हिंदी उपन्यास साहित्य को श्रेष्ठ साहित्यकार तथा उपन्यासकार प्रेमचंद के परिप्रेक्ष्य में विभजित किया गया है। यह युग विभाजन निम्नानुसार है -

1. प्रेमचन्द - पूर्व युग - सन् 1882 - 1918
2. प्रेमचन्द युग - सन् 1918 - 1936
3. प्रेमचन्दोत्तर युग - सन् 1936 से अबतक

इस प्रकार विभाजित इन युगों में प्रमुख उपन्यासकार तथा उनके उपन्यासों में चित्रित 'नारी' पक्ष को देखेंगे।

2.1.1 प्रेमचन्द-पूर्व उपन्यासों में नारी

साहित्य में 'नारी' हमेशा विवेचन का विषय रही है। प्राचीन तथा मध्ययुगीन साहित्य में 'नारी' पूर्णतः दुर्लक्षित रही। तत्कालीन साहित्यकारों ने उसका केवल एकांगी एवं नाममात्र चित्रण किया है। वैदिक काल में परकीय आक्रमण के भय के कारण नारी घर में ही कैद थी। आदिकाल में नारी केवल भोग-विलास का साधन थी। इसका प्रतिबिंब तत्कालीन साहित्य में हमें मिलता है। बौद्ध, जैन साहित्य में नारी को हीन तथा तुच्छ स्थान दिया गया। भक्तिकाल की नारी 'विरक्ति' तथा 'विलास' की दुविधा में फँसी नजर आती है। भक्तिकाल में एक ओर नारी के 'अधम' रूप का चित्रण हो रहा था, तो दूसरी ओर 'सीता' रूप में उसकी पूजा हो रही थी। कबीर, सूर, तुलसी आदि संत कवियों ने नारी को आदर एवं श्रद्धा का स्थान दिया। रीतिकाल में नारी का जो पतन हुआ उससे नारी आज भी उभर नहीं पाई है। इस काल में नारी का शृंगारिक एवं विलासितापूर्ण वर्णन उसके पतन की कहानी कहता है। अर्थात्, भारतीय साहित्य के आदिकाल, भक्तिकाल तथा रीतिकाल में नारी को अलौकिक,

विरक्तिमूलक तथा भोग्यारूप में चित्रित किया गया है।

हिंदी उपन्यास साहित्य के आधुनिक काल में नारी को संस्कारशील तथा प्रेरक शक्ति के रूप में प्रस्तुत किया है। प्रेमचन्द-पूर्व उपन्यास युग सन् 1882 से 1918 तक माना जाता है। इस युग में भारत देश पर अंग्रेजों का शासन था। भारतीय मनोवृत्ति में गुलामी छायी हुई थी। भारत की संस्कृति एवं सभ्यता अंग्रेजी संस्कृति के नीचे दब-सी गई थी। अंग्रेजों की राजनीति तथा उनके दावपेंच के साथ ही इंग्लैंड में हुई औद्योगिक क्रांति के प्रभाव से भारत की आम जनता बच ना सकी। इस गुलामी तथा अत्याचार के विरोध में संपूर्ण भारत ने आवाज उठाई और एक नूतन समाज की रचना होने लगी। इसके लिए सुधारवादी संस्थाएँ एवं समाज सेवकों ने भारत में क्रांति की आवाज उठाई। इस आंदोलन का गहरा परिणाम केवल भारत के जनमानस पर ही नहीं पड़ा; बल्कि समाज की हर जाति, धर्म एवं साहित्य पर भी पड़ा।

हिन्दी साहित्य भी इसी स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़ा रहा। हिन्दी साहित्य पर पाश्चात्य साहित्य का गहरा प्रभाव देखा जा सकता है। स्वतंत्रता-आंदोलन के दौरान राष्ट्रीय धारा प्रवाहमान रही। आम आदमी से लेकर राष्ट्रीय नेताओं तक सारे राष्ट्राभिमान से क्रांति के लिए तत्पर थे। अतः इस काल में काफी मात्रा में देशभक्ति प्रधान या राष्ट्राभिमान से संबंधित साहित्य का निर्माण हुआ। भले ही हिन्दी साहित्य पर पाश्चात्य साहित्य का प्रवाह था; फिर भी इस काल में नारी चित्रण नाममात्र दिखाई देता है।

हिन्दी उपन्यास साहित्य का उद्‌भव भारतेंदु युग से माना जाता है। हिन्दी का सर्वप्रथम मौलिक उपन्यास है, लाला श्री निवासदास कृत 'परीक्षा-गुरू'। इन्होंने इस उपन्यास में 'नारी' विषय की ओर ध्यान ही नहीं दिया। इस काल में 'नारी-विषयक' उपन्यास लिखना या पढ़ना दोनों ही वर्जित था; परंतु कुछ संस्कारशील तथा विचारक साहित्यकारों ने नारी के स्थूल रूप को अपने उपन्यास में स्थान दिया। प्रेमचंद-पूर्व हिन्दी उपन्यास में विविध प्रकार पाये जाते है। जैसे - 1. तिलस्मी उपन्यास 2. जासूसी उपन्यास 3. ऐतिहासिक एवं पौराणिक उपन्यास 4. सामाजिक उपन्यास 5. उपदेशात्मक उपन्यास 6. अनूदित उपन्यास आदि इन उपन्यासों के परिचय द्वारा हम तत्कालीन उपन्यास में नारी-जीवन का प्रथम दर्शन कर सकते है -

2.1.1.1 तिलस्मी उपन्यासों में नारी

हिन्दी साहित्यपर पाश्चात्य साहित्य का प्रभाव हमें सहज दिखाई देता है। देवकीनंदन खत्री ने तिलस्मी एवं ऐय्यारी उपन्यासों का निर्माण कर विश्वभर के साहित्य में अपनी धूम मचा दी। ''उपन्यासकार देवकीनंदन खत्री ने चंद्रकांता, चंद्रकांता-संतति, भूतनाथ आदि तिलस्मी उपन्यासों की रचना की। प्रेम, संघर्ष, ऐयारी और

तिलस्मी इन चार आधारों पर खत्री जी ने अपने उपन्यासों का महल खड़ा किया है।''[5] इन ऐय्यारी और तिलस्मी उपन्यासों पर फारसी पुस्तक 'तिलिस्मेहोशरूबा' का गहरा प्रभाव नजर आता है। इन उपन्यासों में घटनावैचित्र की मात्रा अधिक दिखाई देती है। इस तिलस्मी उपन्यास परंपरा में गोपालराम गहमरी और बाबू हरिकृष्ण जौहर के उपन्यासों का योगदान विशेष उल्लेखनीय है। साथ ही अन्य उपन्यासकारों में देवीप्रसाद शर्मा, मदन मोहन पाठक, विश्वेश्वर प्रसाद वर्मा, रामलाल वर्मा, जयरामदास गुप्त, चंद्रशेखर पाठक आदि के उपन्यासों का योगदान रहा।

प्रेमचन्द-पूर्व तिलस्मी उपन्यासों में नारी को एक ऐय्यार के रूप में चित्रित किया गया है। यह नारियाँ अपने जाल, फरेब, झूठ और चालाकी का इस्तेमाल कर अपनी उपस्थिति को महत्त्वपूर्ण बना देती है। उपन्यास में चित्रित हुई ये नारियाँ अपने स्वार्थ के लिए कुछ भी कर गुजरने को तैयार थी। तिलस्मी उपन्यासकारों ने 'नारी' को केवल एक 'साधन' मानकर इस्तेमाल किया। नारी का रहस्यमयी स्वरूप ही इस काल की पहचान है। तिलस्मी उपन्यासकारों ने नारी के अंतरंग-बहिरंग के दर्शन नहीं कराए है।

2.1.1.2 जासूसी उपन्यासों में नारी

प्रेमचन्द-पूर्व हिन्दी उपन्यास में गोपालराम गहमरी ने जासूसी उपन्यास की परंपरा का आगाज किया। इनके 50-60 उपन्यासों ने जासूसी उपन्यास परंपरा में अपना बहुत बड़ा योगदान दिया है। गहमरी ने 'जासूस' नामक एक मासिक पत्रिका भी निकाली। गहमरी लिखित 'बेकसूर की फाँसी', 'जमना का खून', 'खूनी की खोज' आदि विशेष सफल जासूसी उपन्यास है। जासूसी उपन्यासों पर पाश्चात्य साहित्य का प्रभाव देखा जा सकता है। इन उपन्यासों में कुटनीति, हत्या आदि का समावेश होता है। अन्य जासूसी उपन्यासकारों में देवीप्रसाद शर्मा, मदनमोहन पाठक, विश्वेश्वर प्रसाद शर्मा, रामलाल वर्मा, जयराम दास गुप्त, चंद्रशेखर पाठक आदि का नाम उल्लेखनीय है। प्रेमचन्द-पूर्व जासूसी उपन्यासों में नारी का प्रेमिका रूप अधिक चित्रित हुआ है। वह पुरुष प्रधान संस्कृति के हाथों का खिलौना बन चुकी थी। पुरुष अपनी इच्छानुसार उसका उपयोग करता था।

2.1.1.3 ऐतिहासिक एवं पौराणिक उपन्यासों में नारी

प्रेमचन्द-पूर्व उपन्यास साहित्य में कुछ ऐतिहासिक एवं पौराणिक उपन्यासों की रचना हुई है। इस युग के ऐतिहासिक उपन्यासों पर देवकीनंदन खत्री के तिलस्मी उपन्यासों का प्रभाव नजर आता है। ऐतिहासिक उपन्यासकारों में किशोरीलाल गोस्वामी, ब्रजनंदन सहाय, बलदेव प्रसाद मिश्र तथा कृष्ण प्रकाशसिंह अखौरी

आदि का महत्त्वपूर्ण योगदान है। किशोरलाल गोस्वामी लिखित 'कनक कुसुम' तथा देवकीनंदन खत्री के 'कुसुम कुमारी' आदि ऐतिहासिक उपन्यास है। इन ऐतिहासिक उपन्यास में इतिहास केवल नाममात्र ही अंतर्भूत है। ब्रजनंदन सहाय का 'लाल चीन' तथा मिश्र बंधुओं द्वारा लिखित 'वीरमणि' आदि सफल ऐतिहासिक उपन्यास माने जाते है।

प्रेमचन्द-पूर्व ऐतिहासिक उपन्यासों में नारी के असाधारण वीरता के दर्शन हुए हैं। इनमें चित्रित नारियाँ पुरुष के समान वेश-भूषा पहनकर मर्दाना काम करती थी तथा युद्ध में अपने देश के लिए जान की बाजी लगा देती थी। इन ऐतिहासिक उपन्यासों में नारी के पराक्रमी रूप का सफल चित्रण हुआ है।

पाश्चात्य संस्कृति का भारतीय संस्कृति पर हावी होने के विरोध स्वरूप में पौराणिक उपन्यासों की निर्मिती हुई है। संपूर्ण भारत में पाश्चात्य सभ्यता एवं संस्कृति के प्रभाव के कारण भारतीय समाज, संस्कृति एवं साहित्य अपना मूल स्वरूप खोने लगा था। इसी वजह से तत्कालीन सनातन साहित्यकारों में अपने साहित्य में पौराणिक सती-साध्वी नारियों का उदाहरण उपस्थित कर नारियों को पाश्चात्य नारी के अनुकरण से दूर रखने की कोशिश की।

2.1.1.4 सामाजिक उपन्यासों में नारी

हिंदी उपन्यास-साहित्य में प्रेमचंद पूर्व युग में सामाजिक उपन्यासों की भरमार थी। इन उपन्यासों में सामाजिक जीवन और मानव-चरित्र का चित्रण किया गया है। ''रत्नचन्द प्लीडर का नूतन चरित, बालकृष्ण भट्ट का नूतन ब्रह्मचारी तथा सौ अजान और एक सुजान, राधाकृष्ण दास का निःसहाय हिंदू, राधाचरण गोस्वामी और देवी प्रसाद शर्मा का विधवा विपत्ति; किशोरीलाल गोस्वामी का लवंग लता और कुसुम कुमारी, बाल मुकुन्द गुप्त का कामिनी आदि सामाजिक उपन्यास उल्लेखनीय है।''[6]

किशोरीलाल गोस्वामी जी ने अपने उपन्यास में नारी व्यथाओं को विषय बनाया। उनके 'त्रिवेणी', 'सौभाग्य श्रेणी', 'कुसुम कुमारी', 'स्वर्गीय कुसुम', 'माधवी माधव', 'मदन मोहिनी' तथा 'चपला' आदि उपन्यासों में नारी समस्याओं का चित्रण किया गया है। लज्जाराम मेहता के 'आदर्श हिंदू', तिवारी के 'पुष्पकुमारी', 'शीलमणि' तथा देवी प्रसाद शर्मा के 'सुन्दर सरोजिनी' आदि उपन्यासों में नारी विषयक सुधारवादी दृष्टिकोण प्रस्तुत किया गया है।

प्रेमचन्द-पूर्व सामाजिक उपन्यासों में नारी चित्रण मुख्यतः दो रूपों में प्रस्तुत किया गया है - पहला है पतिव्रता और स्नेहमयी नारी का पावन रूप तथा दूसरा श्रृंगारिकता एवं भोगविलास में डूबी कामिनी नारी का रूप।

भारतेंदु हरिश्चंद्र ने नारी-दुर्दशा पर गहरी चिंता जताई तथा उसके सुधार के लिए साहित्य को माध्यम बनाया। साहित्यकार भारतेंदु का नारी संबंधी दृष्टिकोण अत्यंत उदार था। इस काल के लगभग सभी सामाजिक उपन्यासों में उपन्यासकारों ने समाज सुधार का बीड़ा उठाकर नारी समस्याओं को सुलझाने की कोशिश की है।

2.1.1.5 उपदेशात्मक उपन्यासों में नारी

प्रेमचंद पूर्व उपन्यास साहित्य में कुछ उपदेशात्मक उपन्यासों की निर्मिती हुई है। हिंदी का सर्वप्रथम मौलिक उपन्यास, श्रीनिवासदास-कृत 'परीक्षा-गुरू' एक उपदेशात्मक उपन्यास की कोटी में आता है। इस उपन्यास में उपदेशात्मकता प्रधान है। ईश्वरी प्रसाद शर्मा ने अपने 'वामा शिक्षक' उपन्यास में हिंदू-धर्म के रीति-नीतियों को प्रस्तुत करके हिंदु लड़कियों को लाभान्वित कराने का उद्देश्य रखा और इसके साथ ही उनके लिए आदर्शवत जीवन निर्माण की उपयुक्तता बतलाई है। "ठाकुर जगमोहन सिंह ने अपने 'श्यामा स्वप्न' नामक उपन्यास का समापन इन शब्दों के साथ किया है - 'इस सागर का मंथन कर इसका सार-अमृत लेलो, स्त्री-चरित्रों से बचो। बसु शंकराचार्य के इसी वाक्य का स्मरण रखे - 'द्वारं किमेकं नरकस्य नारी'...।"[7] इसप्रकार ठाकुर जगमोहनसिंह उपदेश देते है।

प्रेमचंद पूर्व उपन्यासकारों ने सामाजिक उपन्यासों में सामाजिक-चेतना जगाना तथा समाज में जागृति लाना अपना मुख्य उद्देश्य माना है। उपदेशात्मक उपन्यासों से मनुष्य के जीवनदर्शन को व्यक्त करने की कोशिश की गई है। आदर्श-जीवन निर्वाह एवं आदर्श-समाज निर्मिति के लिए कुछ उपन्यासकारों ने उपदेशात्मक उपन्यासों की रचना की है। उपन्यासकारों ने इन उपन्यासों में नारी के गौण तथा उच्च दोनों पक्षों को दर्शाकर उसके वास्तविक स्वरूप को समाज के सामने खोलकर रख दिया है। उन्होंने भारतीय नारी को पाश्चात्य प्रभाव से बचाने के लिए नीति-नियमों में बाँधने की कोशिश की है।

2.1.1.6 अनूदित उपन्यासों में नारी

प्रेमचंद पूर्व उपन्यासों में अनुदित उपन्यास अपना अलग महत्त्व रखते है। प्राथमिक तौर पर कुछ मौलिक बँगला तथा अंग्रेजी उपन्यासों के अनुवादों का कार्य हुआ। इनमें भारतेंदु ने 'पूर्ण प्रकाश' और 'चन्द्रप्रभा' आदि अनुवादित उपन्यास लिखे। बाबू गदाधर सिंह ने 'बंग-विजेता' और 'दुर्गेश नंदिनी' तथा राधाकृष्ण दास ने 'स्वर्णलता' और 'मरता क्या न करता', राधाचरण गोस्वीमी ने 'सावित्री', 'विरजा', 'मृण्मयी', प्रतापनारायण मिश्र ने 'राजसिंह', 'इन्द्रा', 'युग लांगुरीय' और 'राजरानी' आदि अनुवादित उपन्यास की

रचना की है। यह अनुवाद लेखन का प्राथमिक दौर था।

अनुवाद लेखन की विकास-परंपरा में भी मौलिक रूप से अनुवाद का कार्य हुआ। बंगला, गुजराती, अंग्रेजी तथा मराठी आदि विभिन्न भाषाओं के उपन्यासों का हिंदी में अनुवाद कार्य हुआ। इनमें रामकृष्ण वर्मा, कार्तिक प्रसाद वर्मा तथा गोपालराम गहमरी आदि का योगदान महत्त्वपूर्ण है। वर्मा के 'ठग वृतान्त-माला', 'अकबर', 'अबला', 'वृत्तान्तमाला', 'चित्तोर-चातकी', खत्री के 'इला', 'प्रमिला' तथा गहमरी के 'चतुर-पंचाल', 'भानुमती', 'नए-बाबू', 'बड़े भाई' तथा अन्य अनेक अनुवादित उपन्यास मिलते है। बाद में कुछ ऐतिहासिक उपन्यासों का अनुवाद कार्य हुआ; जिनमें 'दीप-निर्माण', 'छत्रसाल' तथा 'तारा' आदि रचनाएँ हैं। अंग्रेजी से अनूदित उपन्यासों में 'लन्दन-रहस्य', 'वेनिस का बाँका' तथा 'टामकाका की कुटिया' आदि तथा बँगला से अनूदित उपन्यासों में 'आँख की किरकिरी', उर्दू में 'पूना में हलचल' आदि अनेक उपन्यासों की लंबी फेहरीस्त हमें मिलती है।

प्रेमचन्द-पूर्व अनूदित उपन्यासों पर पाश्चात्य प्रभाव दिखाई देता है। इन उपन्यासों में हमें पाश्चात्य नारी की सभ्यता का परिचय मिलता है। भारत की अन्य भाषाओं के अनूदित उपन्यासों में स्थानिय नारी समस्या को रखा गया है, परंतु इन उपन्यासकारों ने अपने उपन्यास में उतनी गंभीरता से नारी-जीवन को स्थान नहीं दिया है।

तात्पर्य, प्रेमचन्द-पूर्व हिन्दी उपन्यासों में "तिलस्मी, ऐय्यारी, जासूसी, अर्ध-सामाजिक और अर्ध-ऐतिहासिक प्रेम और रोमांस की प्रवृत्ति थी। इन उपन्यासों में न तो नारी के उदात्त रूप के दर्शन होते हैं और रोमांस की प्रवृत्ति थी।"[8] इस युग में नारी-समस्या अपना गंभीर स्वरूप धारण कर चुकी थी। विशेषकर सती-प्रथा और देवदासी प्रथा एक विकट समस्या बन गई थी। इस युग में नारी को रीतिकाल की तरह केवल भोग्या रूप में चित्रित किया गया है। अतः प्रेमचंद पूर्व उपन्यास में नारी संबंधी दृष्टिकोण व्यापक नहीं था।

2.1.2 प्रेमचंद युगीन उपन्यासों में नारी

हिंदी उपन्यास-साहित्य के प्रेमचंद युग में भारतीय समाज में नारी-जागरण, नारी-सुधार आदि आंदोलनों की शुरूवात हो गई थी। भारत में अंग्रेजी सत्ता के खिलाफ स्वाधीनतासंग्राम की लहर चारों ओर फैल गई थी। सामंती अंग्रेजी शासन के खिलाफ तीव्र आंदोलन की आवश्यकता थी; इसके लिए सामूहिक तौर पर स्त्री-पुरुष वर्ग के सहभागी होने की आवश्यकता थी। तत्कालीन नारी-वर्ग की स्थिति बेहाल थी। वह अशिक्षा तथा परिवारिक बंधनों में जकड़ी हुई थी। इस युग में नारी अनेक समस्याओं से घिरी हुई थी। दहेज-प्रथा, बाल-

विवाह पद्धती, अनमेल-विवाह, सती-प्रथा एवं विधवा-पुनर्विवाह आदि समस्याओं ने नारी की स्वतंत्रता एवं विकास को कुंठित कर दिया था। इस युग में नारी ने समाज तथा पारिवारिक बंधनों, रीति-प्रथाओं तथा मान्यताओं के बीच खुद के जीवन को कैद कर रखा था। सेक्स, प्रेम और विवाह इन्हीं के बीच नारी की भूमिका फँस गई थी। समाज के कठोर बंधनों में फँसी नारी को बाहर निकाल कर उसे सामाजिक, राजनीतिक क्षेत्र में सक्रिय बनाने के लिए प्रेरणा की आवश्यकता थी। समाज तथा परिवार में नारी को पुरुष के समान अधिकार दिलाने के लिए समाजसुधारकों तथा नेताओं ने बीड़ा उठाया। इनमें महात्मा गांधी, राजा राममोहन राय, रामकृष्ण परमहंस, रानी लक्ष्मीबाई, भगतसिंह आदि महान व्यक्तियों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। उस दौर में पूरे समाज में नारी-जागृति की आवाज फैल गई थी। इस तरह प्रेमचंद युग में देश की स्वाधीनता संग्राम की तरह ही समाज में 'नारी स्वतंत्रता' चिंतन का विषय बन गई थी।

लन्दन में हुई औद्योगिक क्रांति का परिणाम भारत के उद्योग-व्यापार पर हुआ। मूलतः भारत कृषि प्रधान देश होने की वजह से ज्यादातर उद्योग-व्यवसाय उस पर ही निर्भर थे और इन व्यवसायों पर पूरा परिवार अपना उदर निर्वाह करता था। अंग्रेजी शासन ने भारत में नए-नए उद्योगों को बढ़ावा दिया। इसके कारण लोग खेती को छोड़कर विभिन्न व्यवसायों में जाने लगे। इस तरह समाज में संयुक्त परिवार-व्यवस्था की जड़े हिल गई। इस औद्योगिक क्रांति की वजह से पूँजीवादी व्यवस्था का निर्माण हुआ। पूरे भारत में शहरीकरण की समस्या ने जन्म लिया, परंतु लोगों के परंपरागत मूल्य-संस्कार, मान्यताओं के आदर्शवत तत्त्व वैसे ही बने रहे; इन पर पाश्चात्य संस्कृति-सभ्यता का परिणाम नहीं हुआ। भारत में आधुनिक विचारधारा के बीच पाश्चात्य-विचारधारा का संक्रमण हो रहा था। पश्चिमी विचारकों में से मार्क्स, फ्रायड, एडलर, युंग आदि विद्वानों का प्रभाव भारतीय समाज एवं साहित्य पर पड़ा है। इसी पृष्ठभूमि पर प्रेमचंद युगीन उपन्यास में नारी-जीवन का चित्रण हुआ है।

प्रेमचंद युगीन उपन्यास साहित्य में विविध साहित्यकारों ने 'नारी-जीवन' के विविध पक्षों का चित्रण किया है। उन साहित्यकारों में से कुछ-एक खास साहित्यकारों ने अपने उपन्यास साहित्य में नारी के विविध आयामों को प्रस्तुत किया है; जिनमें प्रेमचंद अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं। उनके उपन्यास-साहित्य में चित्रित नारी आज भी समाज और साहित्य में अपना आदर्श प्रस्तुत करती है। दूसरे महत्त्वपूर्ण उपन्यासकार है जयशंकर प्रसाद। उन्होंने अपने उपन्यासों में भारतीय नारी के आदर्शवादी स्वरूप को चित्रित किया है। तृतीय उपन्यासकार है, वृंदावनलाल वर्मा उनके ऐतिहासिक उपन्यासों में वीर तथा साहसिक नारी को दर्शाया गया है। चतुर्थ उपन्यासकार वह है जिन्होंने अपने नग्न एवं वास्तववादी साहित्यिक दृष्टिकोण से 'नारी-जीवन' पर

प्रकाश डाला है, उनका नाम है पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र'। इस युग में कुछ अन्य उपन्यासकारों ने 'नारी' को अपने विषय के घेरे में लिया और 'नारी-जीवन' पर गहराई से प्रकाश डाला है। इन उपन्यासकारों में जैनेन्द्र, शिवपूजन सहाय, चतुरसेन शास्त्री, विश्वम्भरनाथ कौशिक आदि प्रमुख साहित्यकार है।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर प्रेमचंद युगीन उपन्यासों को पाँच विभागों में विभाजित किया जा सकता है -

1. प्रेमचन्द के उपन्यासों में नारी
2. प्रसाद के उपन्यासों में नारी
3. वृंदावनलाल वर्मा के उपन्यासों में नारी
4. पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' के उपन्यासों में नारी
5. अन्य उपन्यासकारों के उपन्यासों में नारी

इसप्रकार सामान्य रूप से उपन्यासों का विभाजन किया जाता है। प्रेमचंद युगीन साहित्य में नारी-जीवन का समग्र विवेचन देखेंगे -

2.1.2.1 **प्रेमचन्द के उपन्यासों में नारी**

हिन्दी साहित्य में प्रेमचन्द ने जो योगदान दिया है, वह अपने आप में एक उदाहरण है। प्रेमचन्द के साहित्यिक योगदान के कारण इन्हें युग-प्रवर्तक साहित्यकार कहा जाता है। इनका साहित्य यथार्थ एवं आदर्शवाद का पुरस्कार करता है। हिन्दी उपन्यास-साहित्य के प्रेमचंद प्रथम मौलिक उपन्यासकार है। प्रेमचन्द ने अपने उपन्यासों में जन-सामान्य के दुःख-दर्द को दर्शाकर उनके जीवन के मर्म को उद्‌घाटित किया है। इनके उपन्यासों में भारत के जन-जीवन का विशेषकर किसान तथा नारी-जीवन के समस्याओं का चित्रण हुआ है। प्रेमचन्द के उपन्यासों में 'नारी-चित्रण' विशेष रूप से दृष्टिगत होता है। इनके नारी पात्र किसी-ना-किसी गाँव, शहर का प्रतिनिधित्व करते है। यह नारियाँ केवल घर-परिवार तक ही सीमित नहीं रही, बल्कि वह धार्मिक, सामाजिक तथा राजनीतिक क्षेत्र में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा कर रही है। प्रेमचन्द ने अपने उपन्यासों में वेश्या, विधवा, अनमेल-विवाह आदि समस्या से पीड़ित नारी, पुरुष वासना का शिकार बनी नारी, गरीबी से जूझती नारी, अपनी प्रतिभा से घर, समाज एवं राष्ट्र को चलानेवाली सजग आधुनिक नारी आदि नारी के रूपों का चित्रण किया है। प्रेमचन्द के हर नारी पात्र भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता का निर्वाह करके अपने आदर्श स्वरूप को प्रस्थापित करते है। यह नारी-पात्र भारतीय समाज और साहित्य में अपने परंपरागत पूजनीय रूप को बनाए

हुए है।

प्रेमचन्द के उपन्यास में चित्रित नारियाँ आदर्श का निर्वाह करके अपने त्याग, सेवा और पवित्र वृत्ति से समाज और परिवार में अपना अक्षुण्ण स्थान बनाती है। प्रेमचन्द के 'प्रतिज्ञा' उपन्यास में नारी के विधवा-जीवन का वास्तव चित्रण किया गया है। इस उपन्यास में प्रेमचन्द का नारी विषयक सुधारवादी दृष्टिकोण नजर आता है। इस उपन्यास में प्रेमचन्द विधवा समस्या पर 'विधवा आश्रम' का पर्याय बताया है। प्रेमचन्द के 'सेवा सदन' उपन्यास में नारी के वेश्या रूप का चित्रण हुआ है। यह उपन्यास प्रेमचन्द के सुधारात्मक दृष्टिकोण को व्यक्त करता है। इस उपन्यास में प्रेमचन्द ने नारी की वेश्या-प्रवृत्ति के लिए पुरुषों को ही जिम्मेदार माना है तथा नारी उद्धार की आवश्यकता पर बल दिया है।

प्रेमचन्द का 'निर्मला' उपन्यास नारी की विवाह-समस्या को लेकर उपस्थित हुआ है। इस उपन्यास में अनमेल-विवाह का शिकार बनी नारी वेदना को समाज के सामने पहुँचाने की कोशिश की है। प्रेमचन्द के 'प्रेमाश्रम' उपन्यास में भारतीय नारी के परंपरागत आदर्शवादी रूप के दर्शन होते है। इस उपन्यास में दांपत्य-जीवन की समस्या को प्रस्तुत किया गया है। प्रेमचन्द ने इस उपन्यास में 'विधवा पुनर्विवाह' को महत्त्वपूर्ण बताया है।

प्रेमचन्द ने 'कर्मभूमि' उपन्यास में आधुनिक भारत के सजग एवं प्रगतीशील विचारोंवाली नारी के दर्शन कराए है। यह नारियाँ अपने घर-परिवार से निकलकर राजनीति में हिस्सा ले रही है। इस उपन्यास में प्रेमचंद ने अंतर्जातीय प्रेम-विवाह का समर्थन किया है। प्रेमचन्द के 'रंगभूमि' उपन्यास में नारी के शक्तिदायी रूप के दर्शन हुए है। इस उपन्यास की नारी सेवा, सहानूभुति तथा देशप्रेम को अपना जीवनादर्श मानती है।

प्रेमचन्द के 'गबन' उपन्यास में नारी की लोभी वृत्ति के दर्शन होते है; परंतु यही नारी अपनी उदात्तवृत्ति एवं सेवा भाव के कारण आदर्श का निर्माण करती है। इस उपन्यास में अनमेल-विवाह, विधवा-समस्या तथा संयुक्त-परिवार की समस्या को उठाया गया है। प्रेमचन्द के 'गोदान' उपन्यास में नारी-जीवन की गहनता को प्रस्तुत किया गया है। इस उपन्यास के नारी पात्र ग्रामीण, शहरी तथा आधुनिक रूपों में आते है। इस उपन्यास में आदर्श पत्नी, आदर्श माता और आदर्श सास आदि नारी रूपों का चित्रण हुआ है। इसप्रकार प्रेमचन्द ने 'गोदान' उपन्यास में नारी के विभिन्न रूपों को विशद किया है।

इस तरह स्पष्ट है कि, ''प्रेमचंद पूर्व युग में नारी अज्ञानावस्था में थी। पुरुष वर्ग की उस पर धाक थी। वह गुलामी का जीवन व्यतीत कर रही थी, पुरुष की किसी भी बात की अवहेलना उसने कदापि नहीं की थी। पुरुष द्वारा बताए गये मार्ग पर चलना वह अपना धर्म समझती थी, लेकिन प्रेमचंद युग की नारी में जागृति का

प्रादुर्भाव हुआ। यह जागृति विभिन रूपों में हुई। जैसे राष्ट्रीय, सामाजिक, आर्थिक तथा वैचारिक जागृति।''[9] इस प्रकार प्रेमचन्द के उपन्यासों में प्रगतिशील नारी के दर्शन होते है।

2.1.2.2 प्रसाद के उपन्यासों में नारी

युगप्रवर्तक साहित्यकार जयशंकर प्रसाद ने अपनी गद्य रचनाओं द्वारा हिंदी साहित्य की गरिमा में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। हिन्दी उपन्यास साहित्य में प्रसाद के तीन उपन्यास प्रस्तुत हुए है - 'कंकाल', 'तितली' एवं 'इरावती'। इन उपन्यासों में 'कंकाल' उपन्यास यथार्थवादी परंपरा का निर्वाह करता है, 'तितली' सुधारवादी उपन्यास है और 'इरावती' ऐतिहासिक उपन्यास है।

प्रसाद ने अपने साहित्य के द्वारा हमेशा व्यक्ति, समाज और देशप्रेम को बढ़ावा दिया है। अपने उपन्यासों में समाज का सबसे महत्त्वपूर्ण हिस्सा 'नारी' का आदर्श तथा यथार्थ चित्रण किया है। आपके 'कंकाल' उपन्यास में चित्रित नारियाँ समाज और धर्म के कठोर बंधन में पिसकर रह गई है। इस उपन्यास में विधवा, वेश्या, पतिव्रता आदि नारी के विविध रूपों के दर्शन होते है। प्रसाद के 'तितली' उपन्यास में आदर्शवादी भारतीय नारी का चित्रण हुआ है। इस उपन्यास में भारतीय और पाश्चात्य नारी की सभ्यता और संस्कृति के अंतर को स्पष्ट किया है। इस उपन्यास में प्रसाद ने नारी के 'पतिव्रता' धर्म को महत्ता दी है; तथा 'इरावती' उपन्यास में ऐतिहासिक नारी के दर्शन होते हैं। इस उपन्यास में नारी जासूस, नर्तकी, देवदासी आदि रूपों में चित्रित हुई है; साथ ही नारी के वीर, सहनशील, पतिव्रता तथा त्यागी गुणों की भी स्थापना की गई है।

अतः ''प्रसाद की नारी मध्ययुगीन भारतीय नारी की भाँति केवल पुरुष की भोग्या मात्र नहीं, वरन् उसकी जीवन संगिनी बनकर उसके जीवन पथ को आलोकित करती है। प्रसाद के.... उपन्यास... में नारी के इसी समुज्ज्वल रूप का अंकन है। वह श्रद्धा, त्याग और सहिष्णुता की देवी है, समर्पन की सजीव मूर्ति है और निराशा एवं असफलता के भीषण अंधकार में दीपशिखा का काम करती है।''[10] प्रसाद के 'कंकाल', 'तितली' और 'इरावती' इन उपन्यासों में नारी के विविध रूप के दर्शन होते है।

2.1.2.3 वृंदावनलाल वर्मा के उपन्यासों में नारी

जेष्ठ साहित्यकार वृंदावनलाल वर्मा सफल सामाजिक उपन्यासकार के रूप में प्रख्यात है। इनके उपन्यासों में 'नारी-चित्रण' को प्रमुखता दी गई है। इसीलिए उनके उपन्यासों के नाम भी नारी-प्रधान है - उदा. 'विराटा की पद्मिनी', 'लक्ष्मीबाई', 'कचनार', 'मृगनयनी', 'अहिल्याबाई' आदि। वृंदावनलाल वर्मा के

उपन्यास में चित्रित नारी-पात्र शक्तिशाली एवं प्रबल है। इनके उपन्यासों में प्रयुक्त नारी अपने आदर्श के बलपर सामान्य धरातल से उठकर 'देवत्व' स्थान पर आरूढ़ हो जाती है। इन उपन्यासों में नारी पुरुष की तुलना में बहुत आगे निकल गई है।

वृंदावनलाल वर्मा के 'गढ़ कुण्डार' उपन्यास में नारी के प्रेमिका रूप का चित्रण हुआ है। यह प्रेमिका अपने प्रियतम पर अत्यंत उच्च कोटि का प्रेम करती है। इस उपन्यास में नारी के अद्भुत स्वरूप के दर्शन होते हैं। वृंदावनलाल वर्मा ने इस उपन्यास में नारी के सामान्य रूप 'प्रेमिका' और असामान्य रूप 'देवी' को प्रस्तुत किया है। वृंदावनलाल वर्मा के 'झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई' उपन्यास में 'लक्ष्मीबाई' के असाधारण कोटि के व्यक्तित्व को प्रस्तुत किया है। इस उपन्यास में लक्ष्मीबाई की असाधारण वीरता के साथ-साथ आदर्श पत्नी तथा माता आदि रूपों को चित्रित किया गया है। वर्मा ने इस उपन्यास में भारतीय नारी के उच्चतम स्वरूप को प्रस्तुत किया है।

वृंदावनलाल वर्मा के 'कचनार' उपन्यास की नारी गांभीर्य, संयम तथा आत्मगौरव आदि गुणों की मूरत है। इस उपन्यास में चित्रित नारी सौंदर्य एवं कोमलता के साथ-साथ तीखापन भी रखती है। यह नारी अपने संयम और आदर्शता के हत्यार को लेकर पुरुषों से सहज मुकाबला कर सकती है। इस उपन्यास में वृंदावनलाल वर्मा के नारी विषयक विचार ठोस एवं विकसित दिखाई देते है। वर्मा के 'मृगनयनी' उपन्यास में ऐतिहासिक नारी का चित्रण हुआ है। इस उपन्यास में नारी के वीरता, साहसिक वृत्ति तथा कला-प्रेमी के साथ ही उसके सौंदर्य एवं स्वाभिमानी वृत्ति का भी सफल चित्रण हुआ है।

वृंदावनलाल वर्मा के 'लगन' और 'संगम' उपन्यासों में साहसिक नारी का चित्रण हुआ है। यह नारी-पात्र विवेकशील और जागरूक है। वर्मा के 'प्रेमी की भेंट' उपन्यास में चित्रित नारियाँ ईर्ष्या, प्रतिहिंसा और अविवेक से अपना सर्वस्व गवाँ बैठती है। इनके 'अचल मेरा भाई' उपन्यास में विधवा विवाह की प्रधानता दर्ज की गयी है।

अतः ''चारित्रिक तथा नैतिकता की दृष्टि से वर्मा जी के उपन्यासों की नायिकाएँ पूर्णतः भारतीय नारीत्व का प्रतिनिधित्व करती हैं। वे वीर हैं, साहसी हैं, बुद्धिमान और त्यागी हैं। अपने नारीत्व पर आँच आती देख कर, अपने जीवन का उत्सर्ग कर देने की क्षमता उनमें है। ...वर्मा जी के नारी पात्रों में विविधता होते हुए भी दैन्य नहीं है। उनमें शौर्य साहस, त्याग, करूणा और वीरता एक साथ आ मिले है।''[11] इसप्रकार वृंदावनलाल वर्मा के उपन्यासों में नारी विभिन्न रूपों में प्रस्तुत हुई है।

2.1.2.4 पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' के उपन्यासों में नारी

हिंदी साहित्य में पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' प्रकृतिवादी, नग्नवादी तथा अति यथार्थवादी उपन्यासकार के रूप में परिचित हैं। 'उग्र' ने अपने साहित्य में 'नारी-जीवन' के घेरे में उभरे अनेक वास्तववादी सवालों को करीब से जानने की कोशिश की है। 'उग्र' ने अपने उपन्यासों में स्त्री-पुरुष संबंधों को स्पष्टता से खोलकर रखा है। नारियाँ सदियों से पुरुष द्वारा बनाए हुए जाल में उलझी हुई है, वह आज भी इस बंध से मुक्त नहीं हुई है। 'उग्र' अपने उपन्यास में नारी को इसी नीति-नियमों के बंधनों से आजाद कराना चाहते है। 'उग्र' के उपन्यास में नारी दो रूपों चित्रित हुई है - पहले रूप में नारी असह्य एवं विवश है; तो दूसरे में नारी का क्रांतिकारी रूप नजर आता है।

'उग्र' के 'चंद हसीनों के खतूत' उपन्यास में नारी का विद्रोही रूप नजर आता है। यह नारी अपने प्रेम को पाने के लिए समाज और धर्म व्यवस्था से टक्कर लेती है। इनके 'दिल्ली का दलाल' उपन्यास में अनैतिक नारी-व्यापार की समस्या को प्रस्तुत किया गया है। 'उग्र' ने इस उपन्यास द्वारा नारी-व्यापार का नग्न-चित्र उपस्थित करते हुए समाज में स्थित नैतिक व्यवस्था पर सवाल उठाया है।

'उग्र' के 'बुधुआ की बेटी' (मनुष्यानन्द) उपन्यास में नारी के यौन-शोषण की गंभीरता को प्रस्तुत किया गया है। यह नारियाँ पुरुषों की वासना के विरोध में आक्रोश प्रकट करती है। इनके 'शराबी' उपन्यास में वेश्या-नारी का चित्रण हुआ है। साथ ही इसमें अनमेल-विवाह समस्या को भी चित्रित किया गया है।

'उग्र' के 'सरकार तुम्हारी आँखों में' उपन्यास में नारी के रौद्र-रूप के दर्शन होते हैं। यह उपन्यास नारी-शक्ति की महत्ता को प्रस्तुत करता है। इनके 'जी जी जी' उपन्यास में अनमेल-विवाह के कारण हुई नारी की दुर्दशा का वास्तव चित्रण हुआ है। यह नारी-पात्र समाज के असहाय, विवश एवं शोषित नारी का प्रतिनिधित्व करते है।

इस प्रकार 'उग्र' के उपन्यास में 'नारी-समस्या' का बेबाकी से चित्रण हुआ है। 'उग्र' समाज में हुई नारी की इस स्थिति के लिए पुरुष-वर्ग को जिम्मेदार मानते है। इन्होंने अपने उपन्यासों द्वारा 'नारी-मुक्ति' की आवाज उठाई है। 'उग्र' इन उपन्यासों के माध्यम से नारी को मर्यादा एवं आत्मोन्नति का मार्ग दिखाते है और आत्मनिर्भर तथा निर्भय बने रहने की सलाह देते है।

2.1.2.5 अन्य उपन्यासकारों के उपन्यासों में नारी

प्रेमचंद युगीन अन्य उल्लेखनीय उपन्यासकारों में जैनेन्द्र, कौशिक, प्रतापनारायण श्रीवास्तव,

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY

भगवतीचरण वर्मा, चतुरसेन शास्त्री आदि प्रमुख है। इन उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों में नारी के विभिन्न रूपों की चर्चा की है। इनमें से प्रमुख उपन्यासकार है जैनेन्द्र। इन्होने अपने 'परख', 'त्यागपत्र' एवं 'सुनीता' उपन्यासों में नारी के अंतर्जगत का मनोविश्लेषण किया है। यह नारियाँ आधुनिका, विद्रोहिणी तथा निरंकुश रूप में चित्रित हुई है। सेठ गोविन्ददास के 'इंदुमति' उपन्यास में क्रांतिकारी नारी को चित्रित किया गया है। यह नारी आधुनिक समाज तथा नई पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करती है। 'निराला' के 'निरूपमा' तथा 'अप्सरा' उपन्यासों में नारी का परंपरागत तथा आधुनिक रूप में चित्रण हुआ है। विश्वम्भरनाथ कौशिक के 'माँ' और 'भिखारिणी' उपन्यासों में नारी-सुधार को प्रमुखता दी है। प्रफुल्लचंद ओझा 'मुक्त' के 'पाप और पुण्य' उपन्यास में नारी-समस्या का प्रमुख रूप से अंकन हुआ है।

अन्य उपन्यासकारों में से शिवपूजन सहाय के 'देहाती दुनिया', चतुरसेन शास्त्री के 'हृदय की परख', 'वैशाली की नगर वधू', प्रतापनारायण श्रीवास्तव के 'विदा' और 'विकास' ने अपने उपन्यासों में 'नारी-जीवन' को प्रमुखता दी है। इसी युग में भगवती प्रसाद वाजपेयी, ऋषभचरण जैन, जी. पी. श्रीवास्तव तथा सुदर्शन आदि उपन्यासकारों के उपन्यासों में नारी-चित्रण मिलता है।

प्रेमचंद युगीन सभी उपन्यासकारों ने 'नारी-स्वतंत्रता' का समर्थन किया है। नारी विकास के लिए इन साहित्यकारों ने नारी-आंदोलन तथा नारी-जागरण में अपनी सक्रिय भूमिका निभाई है। इनके उपन्यासों में नारी को पुरुषाधिनता, धार्मिकता तथा समाजिक बंधन से मुक्ति दिलाने का प्रयत्न हुआ है। इन सभी उपन्यासकारों का नारी के प्रति अपना दृष्टिकोन अत्यंत 'उदात्त' स्वरूप का है। प्रेमचंद युगीन इन उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों में नारी संवेदना को एक आवाज दी है।

2.1.3 प्रेमचंदोत्तर उपन्यासों में नारी

प्रेमचंद युग के पश्चात् भारतीय समाज एवं साहित्य दोनो में तेजीसे परिवर्तन आ गया। प्रेमचंद युग के अंत में हुए साहित्यिक बदलावों ने प्रेमचंदोत्तर युग तक आते-आते अपना विस्तृत स्वरूप प्राप्त कर लिया था। इन परिवर्तनों के अंतर्गत साहित्य में अनेक प्रयोग किए जाने लगे; नई प्रवृत्तियों का जन्म हुआ, विविध विचारधाराओं ने भी अपने प्रभाव से साहित्य को नई दिशा देने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया। प्रेमचंद युग के साहित्य में मनुष्य के बाह्य क्रिया-कलापों का ही विवेचन हुआ है, परंतु प्रेमचंदोत्तर युग में मनुष्य के मन में उठी सूक्ष्माती-सूक्ष्म तरंगों पर भी ध्यान देकर उसका विश्लेषण किया जाने लगा। इन साहित्यकारों ने मनुष्य के मन में उठे सुख-दुःखादी भाव, भावनाओं में उलझे हुए उसके व्यक्तित्व को साहित्य में प्रस्तुत किया।

प्रेमचंदोत्तर साहित्य पर मार्क्सवादी और प्रगतिवादी विचारधारा का गहरा प्रभाव पड़ा है। कार्लमार्क्स के 'द्वंद्वात्मक भौतिकवाद' सिद्धांत के परिणामस्वरूप साहित्य और समाज में अनेक अमूलाग्र परिवर्तन हुए। फलस्वरूप पूँजीवादी समाज-रचना का निर्माण हुआ। इसके प्रभाव से समाज में यौनाचार और धन-लोलुपता फैलने लगी। इसी प्रवृत्ति ने नारी को केवल भोगवादी और नितांत वैयक्तिक जीवन जीने के लिए मजबूर कर दिया। समाज तीन वर्ग में बँट गया - धनिक वर्ग, मध्यवर्ग और श्रमिक वर्ग। इन तीन स्तरों में चल रहे पैसे के व्यापार में नारी मात्र साधन बनकर रह गई। इन परिस्थितियों में नारी असहय, विवश और आधिन होकर अपने-आप में ही उलझी रही; जिसके परिणामस्वरूप नारी मानसिक कुंठा की शिकार हो गई। प्रेमचंद युग के साहित्य में नारी परंपरागत आदर्शवाद का निर्वाह करती नजर आती है; लेकिन प्रेमचंदोत्तर युग साहित्य में नारी आधुनिकता के विरोध में विद्रोह करती दिखाई देती है। प्रेमचंदोत्तर उपन्यासों में नारी के इसी क्रांतिकारी स्वरूप को चित्रित किया गया है।

प्रेमचंदोत्तर युग में सामाजिक, सांस्कृतिक तथा राजनीतिक परिवर्तनों के साथ ही हिंदी उपन्यास साहित्य में नारी दृष्टिकोण में बदलाव आ गया। प्रेमचंदोत्तर उपन्यास में नारी-चित्रण यथार्थता की धरातल पर हुआ है। इस युग में स्वाधीनता संग्राम ने नारी में स्वतंत्रता की भावना जागृत हो गई। यह नारी प्रेमचंद युग की तरह सामान्य जीवन नहीं जीती; अपितु अब तो उसका कार्यक्षेत्र विस्तृत हो गया है। यह नारियाँ घर-परिवार की परिधि से कई उपर उठकर समाज एवं देश में अपनी अलग पहचान बना रही है। ''प्रेमचंदोत्तर उपन्यासों में नारी का सुशिक्षित और नवचेतना संपन्न रूप ही अधिक चित्रित हुआ जो 'घर' के अतिरिक्त बाहरी क्षेत्रों में भी अपनी क्षमताओं का प्रदर्शन करना चाहती थी।''[12] प्रेमचंदोत्तर साहित्यकारों ने नारी में आए इन बदलाओं के परिक्षण के लिए पाश्चात्य मनोविज्ञान का आधार लिया और नारी के इसी बहुरंगी-बहुढंगी व्यक्तित्व को रोचकता से प्रस्तुत किया।

प्रेमचंदोत्तर उपन्यासों पर फ्रायड तथा कार्लमार्क्स के विचारधारा के साथ ही तत्कालीन भारतीय समाज में नारी स्थिति में आए बदलाओं का गहरा प्रभाव पड़ा है। भारत में तत्कालीन समाज पर पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति के अतिक्रमण की वजह से अनाचार फैल रहा था। समाज के अंदर उच्छृंखलता, अनाचार, नग्नता का प्रदर्शन बढ़ने लगा था; साथ ही शिक्षाप्रणाली में आए दोषपूर्णता ने परंपरागत नारी मान्यताओं को हिलाकर रख दिया था। नारी में तेजी से होते गए बदलाओं के कारण प्रेमचंदोत्तर उपन्यासों में उसके बदलते गए विभिन्न रूपों को अपना लक्ष्य बनाया है।

उपर्युक्त विवेचन के आधारपर प्रेमचंदोत्तर उपन्यासों की प्रवृत्ति के अनुसार उपन्यासों को दो विचारधाराओं

में विभाजित किया जाता है -

1] मनोविश्लेषणात्मक विचारधारा

2] साम्यवादी विचारधारा

इस तरह प्रेमचंदोत्तर उपन्यासों में प्रवाहित इन विचारधाराओं में नारी-चित्रण के स्वरूप को हम देखेंगे -

2.1.3.1 मनोविश्लेषणात्मक विचारधारा के उपन्यासों में नारी

प्रेमचंदोत्तर हिंदी-साहित्य में पाश्चात्य 'मनोविज्ञान' का इस्तेमाल किया जाने लगा। पाश्चात्य मनोविश्लेषक सिग्मन्ड फ्रायड ने 'मनोविश्लेषणवादी सिद्धांत' को प्रस्तुत किया। फ्रायड ने मानवी मन को तीन स्तरों में विभाजित किया - चेतन, अर्द्धचेतन तथा अवचेतन। मनुष्य समाज के भय से, निंदा से बचने के लिए अपनी हीन-भावनाओं का दमन करता है। इन भावनाओं का अवचेतन मन में संचय होता है। यही दमित इच्छाएँ अभिव्यक्त होने के लिए अवचेतन मन में सदा संघर्षरत रहती है। आधुनिक मनोवैज्ञानिकों ने इस दमित इच्छाओं को कामभावना का प्रतिक माना है। फ्रायड ने इसको 'लिबिडो' कहा है। फ्रायड मनुष्य के मनोवेगों और मनोविकारों का मूल 'यौन-भावना' को मानते है। फ्रायड के विचार से व्यक्ति के जीवन निर्माण में 'कामेच्छा' का ही महत्त्वपूर्ण हाथ होता है। इस प्रकार पाश्चात्य मनोवैज्ञानिक फ्रायड के साथ-साथ एडलर, युंग आदि ने मानवी मन का विश्लेषण किया है।

हिंदी साहित्य पर इस मनोविज्ञान का गहरा असर पड़ा है। "विचारधारा के स्तर पर फ्रायड, एडलर, युगं का प्रभाव भारतीय साहित्य पर पड़ा। ...जैनेंद्र, अज्ञेय, जोशी तीनों ने नारी के रूपों को एक विशिष्ट गरिमा दी जिसमें नारी के अंतर्मन का रूप झलका जिसमें नारी की वैयक्तिक समस्याओं को भी महत्त्व मिला।"[13] हिंदी उपन्यास में भी जैनेंद्र, इलाचंद्र जोशी और 'अज्ञेय' ने मनोविश्लेषणात्मक विचारधारा का उपयोग किया है। इन्होने अपने उपन्यासों में मनोविश्लेषण की विविध प्रणालियों का इस्तेमाल किया है। इनमें स्वप्न-विश्लेषण, प्रत्यावलोकन विश्लेषण, संमोहन, शब्द सहस्मृति परीक्षा और इतिवृत्तात्मक आदि प्रमुख हैं। इन साहित्यकारों ने मनोविश्लेषणात्मक प्रणालियों से 'नारी-जीवन' को गहराइयों से नापने का प्रयत्न किया है।

प्रेमचंदोत्तर मनोविश्लेषणवादी उपन्यासकारों में जैनेंद्र का स्थान अग्रणी है। इन्होंने अपने उपन्यासों में मनोवैज्ञानिक विश्लेषण प्रवृत्ति को अपनाया है। इनके उपन्यास मानव के प्रेम और सेक्स की समस्याओं को उद्घाटित करते है। "जैनेंद्र ने घर और बाहर की समस्या को नारी-पात्रों के माध्यम से उठाया है। नारी-पात्र ही उपन्यास के केंद्र में हैं। वे एक की पत्नी और दूसरे की प्रेमिका के रूप में उपस्थित की गयी हैं। ...वे सतीत्व के

परंपरागत स्वरूप को अस्वीकार करके नारीत्व की नयी व्याख्या प्रस्तुत करते है।''[14] इनके उपन्यास में चित्रित नारी-पात्र आत्मपीड़न, कुंठाग्रस्त तथा असंतोषपूर्ण जीवन जीते है। जैनेंद्र ने 'कल्याणी', 'सुखदा', 'विवर्त्त', 'व्यतीत', 'जयवर्धन', 'मुक्तिबोध', 'अनन्तर' तथा 'अनामस्वामी' उपन्यासों में नारी का अंतःर्बाह्य चित्रण किया है।

इलाचंद जोशी ने अपने उपन्यास में मनोविज्ञान का भरपूर उपयोग किया है। इनके 'मुक्ति-पथ', 'सुबह के भूले', 'प्रेत और छाया', 'संन्यासी' और 'पर्दे की रानी' आदि उपन्यासों में कामभावना का दमन करने वाली नारी का चित्रण हुआ है। इसके कारण उसका संपूर्ण जीवन अव्यवहारिक और असामाजिक बनता है। ''जोशी को संस्कारबद्ध परंपरा की पगडंडी पर मौन-मंथर चलनेवाली भावुक नारी नापसंद है। पुरुष के अहम् से अभय रहने वाली, समाज का कल्याण समझने वाली एवं स्वतंत्र व्यक्तित्व बनाये रखने वाली नारी उन्हें पसंद है।''[15]

''अज्ञेय की नारी-दृष्टि भावना से शरीर और फिर शरीर को तृप्त करके आत्मा के आनंद की ओर उन्मुख है।''[16] अज्ञेय के 'शेखर : एक जीवनी', 'नदी के द्वीप' उपन्यास में स्त्री-पुरुष के स्वच्छंद संबंधों पर प्रकाश डाला है।

इस प्रकार हिंदी-उपन्यास साहित्य में मनोविश्लेषणात्मक विचारधारा को लेकर एक नई परंपरा की शुरूवात हो गई। इन उपन्यासों में नारी-जीवन को सर्वांग से विश्लेषित किया जाने लगा।

2.1.3.2 साम्यवादी विचारधारा के उपन्यासों में नारी

पाश्चात्य विद्वान कार्ल मार्क्स ने 'द्वंद्वात्मक भौतिकवाद' सिद्धांत की स्थापना की। इनके अनुसार पूँजीवादी समाज-रचना के दो वर्ग होते है - शोषक और शोषित। इस समाज व्यवस्था में पुरुष शोषक और नारी-शोषित है। कार्ल मार्क्स की विचारधारा से प्रभावित साहित्यकारों ने नारी को परंपरा के बंधनों से मुक्त किया। उन्होने नारी के लिए समाज और राजनीति क्षेत्र को खुला कर दिया। प्रेमचंदोत्तर साम्यवादी तथा प्रगतिवादी साहित्यकारों ने नारी को नई दिशा, नई दृष्टि प्रदान की है।

प्रेमचंदोत्तर साम्यवादी उपन्यासकारों में उपेंद्रनाथ 'अश्क' का प्रमुख स्थान है। इनके 'सितारों के देव', 'गिरती दीवारें' आदि उपन्यासों में नारी-चरित्रों को अत्यंत व्यापकता से चित्रित किया गया है। 'अंचल' के 'चढ़ती धूप' उपन्यास में नारी-समस्याओं का प्रभावी रूप में चित्रण हुआ है। रांगेय राघव के 'घरोंदे', 'हुजूर', 'विषाद मठ', 'यशोधरा जीत गई', 'मुर्दों का टीला' तथा 'प्रतिदान' उपन्यासों में नारी-समस्या का प्रमुख रूप से चित्रण हुआ है। ''रांगेय राघव के उपन्यासों में यौन और विवाह के निर्वाह में आदर्श की उपेक्षा की गई है।

इनके नारी पात्रों में यौन जनित वासना जितनी अधिक है उतनी गौरव की दीप्ति नहीं, यथार्थ को चित्रित करते-करते आदर्श भूल जाते हैं।''[17]

यशपाल के 'दादा कामरेड', 'दिव्या', 'मनुष्य के रूप', 'अनिता', 'झूठा-सच', 'बारह घंटे', 'अप्सरा का शाप', 'क्यों फँसे' और 'मेरी तेरी उसकी बात' आदि उपन्यासों में नारी-जीवन पर व्यापक प्रकाश डाला गया है। इन्होने अपने उपन्यास में नारी के आत्मपीड़न को प्रस्तुत किया है। नागार्जुन इस युग के प्रगतिशील उपन्यासकार है। इनके 'रतिनाथ की चाची' तथा 'नई पौध' उपन्यासों में नारी-जीवन के विविध पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है। अमृतराय के 'बीज', 'नाग फनी का देश', 'हाथी के दाँत' आदि नारी प्रधान उपन्यास है। अमृतराय ने अपने उपन्यास में ''प्रेम, विवाह, मुक्त भोग एवं नारी से संबंधित अनेक प्रकार की समस्याओं का निरूपण किया है।... अमृतराय विवाह को महत्त्व देते हुए भी नारी स्वाधिनता के झण्डे गाड़ते हैं। यहीं उनकी मुख्य विशेषता है।''[18] धर्मवीर भारती के 'गुनाहों के देवता', भगवती प्रसाद वाजपेयी के 'पिपासा', राहुल सांकृत्यायन के 'सिंह सेनापति', 'जययौधेय' तथा 'मधुर स्वप्न' और सर्वदानंद के 'नरमेघ' आदि उपन्यासों में नारी जीवन को केंद्र में रखा है। इन उपन्यासों में नारी जीवन के प्रेम-समस्या, पति-पत्नी समस्या का प्रमुखता से चित्रण हुआ है।

इस प्रकार मनोविश्लेषणात्मक, साम्यवादी तथा प्रगतिवादी उपन्यासकारों ने नारी की 'सेक्स' प्रकृत्ति को ही प्रमुखता दी है। ये उपन्यासकार समाज के किसी भी बंधन को स्वीकार नहीं करते है। प्रेमचंदोत्तर युग में ''नारी के प्रति नैतिकता के मानदण्डों को इन्होने बिल्कुल भुला दिया। नारी कहीं रहे, उसका किसी से विवाह हो, पुरुष कहीं रहे, उसकी कोई भी पत्नी हो, परंतु दोनों को खुली छूट है कि वह किसी से भी जाकर प्रेम-संबंध स्थापित करे। आध्यात्मिक पवित्रता की ओट में बहन का बहनत्व, भाभी का भाभीत्व सब कुछ बह गया। ....इस प्रकार के अश्लील चरित्रों में उलझ कर आज का हिंदी उपन्यास अपने रास्ते से हट गया है।''[19]

प्रेमचन्दोत्तर युग में चित्रित नारी को अपने अस्तित्व की पहचान हो गई है। यह नारी अपनी सामाजिक, पारिवारिक तथा आर्थिक समस्याओं का हल खुद ढूँढ़ना चाहती है। आधुनिक प्रगतिशील विचारधारा को लेकर अनेक साहित्यकारों ने 'नारी-जीवन' पर प्रकाश डालने की कोशिश की है। इन उपन्यासों में 'डाक बँगला' (कमलेश्वर), 'सीमाएँ टूटती हैं' (श्रीलाल शुक्ल), 'दुसरी बार' (श्रीकांत वर्मा), 'बेघर' (ममता कालिया), 'सूरजमूखी अँधेरे के' (कृष्णा सोबती), 'आधा गाव' (राही मासूम रजा), 'कालाजल' (शानी) आदि उपन्यास अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। इन अपन्यासों में आधुनिकता के बोझ में फँसी नारी का सफल चित्रण हुआ है।

हिंदी उपन्यास-साहित्य में महिला उपन्यासकारों का योगदान अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। इन्होने अपने

उपन्यासों में भारतीय नारी का यथार्थ चित्रण किया है। ''महिला उपन्यासों में दोनों पक्ष उजागर हुए हैं - उनकी मानवीय संवेदना का पक्ष, उन पर हुए अन्याय, षड्यन्त्र, शोषण के विरोध में तेजस्विता व विद्रोह का पक्ष। यह मानना पड़ेगा कि ....महिला उपन्यास लेखन प्रमुखतः महिला के स्व, अधिकार और अस्मिता के लिए प्रतिबद्ध प्रतीत होता है।''[20] इन प्रमुख महिला उपन्यासकारों में सुनीता जैन, शशी प्रभा शास्त्री, सरला माहेश्वरी, डॉ. उषा यादव, मृदुला गर्ग, श्रीमती उषा देवी मित्रा, कुमारी कांचनलता सब्बरवाल, शिवानी, उषा प्रियंवदा, दिप्ती खंडेलवाल, मैत्रेयी पुष्पा आदि का नाम उल्लेखनीय है।

संक्षेप में, प्रेमचंदोत्तर हिंदी उपन्यास-साहित्य में नारी-जीवन को बदलते सामाजिक परिवेश के साथ प्रस्तुत किया गया है।

निष्कर्ष

हिंदी उपन्यासों में नारी के विभिन्न रूपों को साकार रूप मिला है। प्रेमचन्द-पूर्व हिन्दी उपन्यासों में नारी चित्रण सीमित रूप में मिलता है; तथापि प्रेमचन्द युग तक आते-आते नारी स्वरूप को एक ठोस धरातल प्राप्त हुआ। इस युग में नारी 'देवी' या 'दानवी' रूप से उठकर सामान्य स्वरूप में माता, बहन, भाभी आदि रूपों में प्रस्तुत हुई है। प्रेमचन्दोत्तर उपन्यासों में नारी के विभिन्न स्वरूपों का चित्रण किया गया है। यह उपन्यास 'नारी-आन्दोलन' में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान देते है।

प्रेमचन्द पूर्व-उपन्यास की नारी चार-दीवारों में कैद थी; मात्र आज की नारी के रहन-सहन, आचार-विचार एवं जीवन-शैली में संपूर्ण बदलाव आ गया है। आज की नारी पुरुष की सहचरी है। साथ ही समाज एवं राष्ट्र के सामने अपने 'स्वतंत्र-अस्तित्व' निर्माण के लिए संघर्षरत है, फिर भी आज की नारी परंपरा तथा आधुनिक मूल्यों में फँसी है। जिसे हिन्दी-उपन्यासों में बखुबी दर्शाया गया है। हम यह निश्चित रूप से कह सकते है कि हिन्दी साहित्य के उपन्यास विधा में नारी-चित्रण की असीम संभावनाएँ है। हिन्दी उपन्यास-साहित्य में नारी के प्राचीन युग से लेकर आधुनिक युग तक बदलते गए नारी-स्वरूप का संपूर्ण चित्रण मिलता है।

संदर्भ सूची

1. आ. उमेश शास्त्री - हिन्दी साहित्य का निबन्धात्मक इतिहास, पृ. 65
2. शिवकुमार शर्मा - हिन्दी साहित्य युग और प्रवृत्तियाँ, पृ. 616
3. वही, पृ. 616

15503

4. राजनाथ शर्मा - साहित्यिक निबन्ध, पृ. 553
5. बिजली प्रभा प्रकाश - जैनेन्द्र के उपन्यासों के नारी-चरित्रों का मनोवैज्ञानिक धरातल, पृ. 38
6. शिवकुमार शर्मा - हिन्दी साहित्य युग और प्रवृत्तियाँ, पृ. 617
7. डॉ. सूतदेव 'हंस' - उपन्यासकार चतुरसेन के नारी-पात्र, पृ. 31
8. डॉ. विमल शर्मा - साठोत्तर हिन्दी उपन्यासों में नारी के विविध रूप, पृ. 36
9. डॉ. योगेश सुरी - यशपाल के उपन्यास में नारी जीवन की समस्याएँ, पृ. 34
10. रामविलास शर्मा - युग प्रवर्तक जयशंकर प्रसाद, पृ. 47
11. श्रीमती डॉ. उषा भटनागर - वृंदावनलाल वर्मा के उपन्यासों का सांस्कृतिक अध्ययन, पृ. 178
12. डॉ. विमल शर्मा - साठोत्तर हिन्दी उपन्यासों में नारी के विविध रूप, पृ. 50
13. डॉ. गणेश दास - स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी में नारी के विविध रूप, पृ. 70
14. गिरीधर प्रसाद शर्मा - हिन्दी उपन्यासों का मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन, पृ. 98
15. वही, पृ. 152
16. वही, पृ. 131
17. डॉ. योगेश सुरी - यशपाल के उपन्यासों में नारी जीवन की समस्याएँ, पृ. 244
18. वही, पृ. 247
19. डॉ. विमल शर्मा - साठोत्तर हिन्दी उपन्यासों में नारी के विविध रूप, पृ. 38
20. डॉ. मृत्युंजय उपाध्याय - स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास का स्वरूप, पृ. 105